

मुंगेर संसदीय क्षेत्र में मतदान व्यवहार के निर्धारक तत्व : जाति, वर्ग, धर्म एवं राजनीतिक चेतना का विश्लेषण

कन्हैया कुमार¹; डॉ० मो० मुश्फिक आलम²

¹शोधार्थी, स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग, तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

²एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, टी०एन०बी० कॉलेज, भागलपुर, तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

शोध—सार

भारतीय लोकतंत्र में मतदान व्यवहार चुनावी राजनीति का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। मतदान केवल प्रतिनिधियों के चयन की प्रक्रिया नहीं, बल्कि मतदाताओं की सामाजिक पहचान, आर्थिक स्थिति, धार्मिक मान्यताओं, राजनीतिक जागरूकता और विकास संबंधी अपेक्षाओं की अभिव्यक्ति भी है। भारतीय समाज की बहुलतावादी संरचना में जाति, वर्ग और धर्म जैसे सामाजिक कारक मतदाताओं के राजनीतिक दृष्टिकोण तथा चुनावी निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं। इसके साथ ही शिक्षा, राजनीतिक चेतना, मीडिया, चुनावी प्रचार, नेतृत्व और स्थानीय विकास के प्रश्न भी मतदान व्यवहार को आकार देते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य मुंगेर संसदीय क्षेत्र के संदर्भ में मतदान व्यवहार के प्रमुख निर्धारक तत्वों का समाजशास्त्रीय एवं राजनीतिक विश्लेषण करना है। इसमें जातिगत पहचान, सामाजिक—आर्थिक वर्ग, धार्मिक पहचान तथा राजनीतिक चेतना के पारस्परिक संबंधों को समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन में मतदान व्यवहार संबंधी प्रमुख सैद्धांतिक दृष्टिकोणों तथा भारतीय चुनावी राजनीति पर उपलब्ध साहित्य का उपयोग किया गया है। विश्लेषण से यह अवधारणा सामने आती है कि मतदाता का चुनावी निर्णय किसी एक कारक से निर्धारित नहीं होता, बल्कि सामाजिक पहचान, आर्थिक हित, राजनीतिक नेतृत्व, विकास संबंधी अपेक्षाओं और लोकतांत्रिक जागरूकता के संयुक्त प्रभाव से निर्मित होता है। मुंगेर संसदीय क्षेत्र में इन कारकों की वास्तविक भूमिका का निर्धारण स्थानीय स्तर पर प्राथमिक सर्वेक्षण, चुनावी आँकड़ों और मतदाताओं के अनुभवों के व्यवस्थित अध्ययन से किया जाना आवश्यक है।

शब्दकुंजी : मतदान व्यवहार, चुनावी राजनीति, जाति, सामाजिक वर्ग, धर्म, राजनीतिक चेतना एवं लोकतांत्रिक भागीदारी।

प्रस्तावना

हिन्दुस्तान की आजादी के बाद भारतीय लोकतंत्र में चुनावी राजनीति में मतदान व्यवहार का एक महत्वपूर्ण पक्ष है, क्योंकि लोकतंत्र में मतदान केवल प्रतिनिधियों का चयन नहीं है, बल्कि मतदाताओं, सामाजिक विकास, सामाजिक पहचान, आर्थिक स्थिति, धार्मिक अधिकार, शिक्षा का अधिकार, मौलिक अधिकार, राजनीतिक जागरूकता के साथ—साथ मतदाताओं की उन्नति संबंधी अपेक्षाओं की अभिव्यक्ति भी है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में चुनाव नागरिकों को राजनीतिक प्रतिनिधियों के चयन तथा शासन की दिशा को प्रभावित करने का अवसर प्रदान करते हैं। मतदान व्यवहार से आशय उन परिस्थितियों, विचारों, सामाजिक संबंधों और राजनीतिक प्राथमिकताओं से है, जिनके आधार पर मतदाता किसी उम्मीदवार, राजनीतिक दल या चुनावी गठबंधन के पक्ष अथवा विपक्ष में मतदान करने का निर्णय लेते हैं। यह व्यवहार व्यक्तिगत पसंद का परिणाम होने के साथ—साथ सामाजिक संरचना, राजनीतिक संस्थाओं और ऐतिहासिक परिस्थितियों से भी प्रभावित होता है। भारत में मतदान व्यवहार का अध्ययन विशेष महत्व

रखता है, क्योंकि भारतीय समाज जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र, वर्ग और सांस्कृतिक विविधताओं से निर्मित है। इन विविधताओं का प्रभाव राजनीतिक दलों की रणनीतियों, उम्मीदवारों के चयन, चुनावी मुद्दों और मतदाताओं की प्राथमिकताओं में दिखाई दे सकता है। हालांकि, किसी सामाजिक समूह के सभी सदस्यों के मतदान व्यवहार को एक समान मानना उचित नहीं है। एक ही जाति, धर्म या आर्थिक वर्ग के लोगों के राजनीतिक निर्णय उनकी शिक्षा, आय, रोजगार, पीढ़ीगत अनुभव, स्थानीय समस्याओं और राजनीतिक विचारधारा के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं। मुंगेर संसदीय क्षेत्र बिहार की चुनावी राजनीति के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यहाँ मतदान व्यवहार को समझने के लिए स्थानीय सामाजिक संरचना, ग्रामीण एवं शहरी परिस्थितियों, कृषि और गैर-कृषि रोजगार, शिक्षा, विकास संबंधी अपेक्षाओं, राजनीतिक दलों की सक्रियता तथा विभिन्न सामाजिक समूहों की राजनीतिक भागीदारी का अध्ययन किया जा सकता है। संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले विधानसभा क्षेत्रों और स्थानीय समुदायों की परिस्थितियाँ भी एक-दूसरे से भिन्न हो सकती हैं। इसलिए संपूर्ण संसदीय क्षेत्र को एक समान सामाजिक एवं राजनीतिक इकाई मानने के बजाय उसके आंतरिक अंतर को ध्यान में रखना आवश्यक है। जाति भारतीय समाज में सामाजिक संबंधों और राजनीतिक लामबंदी का एक महत्वपूर्ण आधार रही है। राजनीतिक दल कभी-कभी उम्मीदवार चयन, सामाजिक प्रतिनिधित्व और चुनावी गठबंधन बनाने में जातिगत समीकरणों पर विचार करते हैं। इसी प्रकार, आर्थिक वर्ग मतदाताओं की रोजगार, महँगाई, कृषि, मजदूरी, कल्याणकारी योजनाओं और सार्वजनिक सेवाओं से संबंधित प्राथमिकताओं को प्रभावित कर सकता है। धर्म भी राजनीतिक पहचान, सामुदायिक अनुभव और राजनीतिक प्रतिनिधित्व की अपेक्षाओं से जुड़ सकता है। दूसरी ओर, राजनीतिक चेतना नागरिकों को राजनीतिक अधिकारों, सरकारी नीतियों, उम्मीदवारों के प्रदर्शन और लोकतांत्रिक जवाबदेही के आधार पर निर्णय लेने के लिए प्रेरित कर सकती है।

प्रस्तुत अध्ययन का केंद्रीय प्रश्न यह है कि मुंगेर संसदीय क्षेत्र में जाति, वर्ग, धर्म और राजनीतिक चेतना मतदान व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित कर सकते हैं तथा इन कारकों के बीच किस प्रकार की अंतःक्रिया संभव है। अध्ययन का उद्देश्य किसी विशेष समुदाय या राजनीतिक दल के मतदान संबंधी व्यवहार के बारे में पूर्वनिर्धारित निष्कर्ष प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि इन कारकों की भूमिका को एक व्यवस्थित विश्लेषणात्मक ढाँचे में समझना है।

साहित्य की समीक्षा :

लाजर्सफेल्ड, बेरल्सन एवं गौडेट की पुस्तक *The People's Choice* (1944)¹ मतदान व्यवहार के समाजशास्त्रीय अध्ययन की एक महत्वपूर्ण कृति है। लेखकों ने चुनावी निर्णयों के निर्माण में सामाजिक समूहों, पारिवारिक संबंधों, मित्रता और सामाजिक संपर्कों की भूमिका पर बल दिया। उनके अध्ययन से यह समझ विकसित होती है कि मतदाता का निर्णय केवल व्यक्तिगत राजनीतिक विचारों से निर्धारित नहीं होता, बल्कि उसके सामाजिक परिवेश से भी प्रभावित हो सकता है। मुंगेर संसदीय क्षेत्र के संदर्भ में यह दृष्टिकोण परिवार, समुदाय, स्थानीय नेतृत्व और सामाजिक नेटवर्क की भूमिका का अध्ययन करने में उपयोगी है।

बेरल्सन, लाजर्सफेल्ड एवं मैकफी की पुस्तक *Voting : A Study of Opinion Formation in a Presidential Campaign* (1954)² में चुनावी अभियान के दौरान मतदाताओं की राय के निर्माण और परिवर्तन का अध्ययन किया गया है। यह कार्य बताता है कि मतदान संबंधी निर्णय सामाजिक समूहों, राजनीतिक संचार और चुनावी वातावरण से प्रभावित हो सकते हैं। मुंगेर में चुनावी सभाओं, स्थानीय प्रचार, मीडिया और व्यक्तिगत संपर्कों की भूमिका का अध्ययन इस दृष्टिकोण से किया जा सकता है।

पॉल आर. ब्रास की पुस्तक *The Politics of India Since Independence* (1990)³ भारतीय राजनीति के विकास, राजनीतिक दलों, सामाजिक समूहों और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का विश्लेषण करती है। भारतीय लोकतंत्र में सामाजिक विविधता और राजनीतिक लामबंदी को समझने के लिए यह पुस्तक महत्वपूर्ण है। मुंगेर के अध्ययन में इस दृष्टिकोण के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि सामाजिक पहचानें किस प्रकार चुनावी प्रतिस्पर्धा और प्रतिनिधित्व की राजनीति से जुड़ सकती हैं।

रजनी कोठारी की संपादित पुस्तक *Caste in Indian Politics* (1970)⁴ भारतीय राजनीति में जाति की भूमिका को समझने वाली प्रमुख कृतियों में शामिल है। कोठारी का विश्लेषण जाति और राजनीति के संबंध को केवल परंपरागत सामाजिक व्यवस्था के रूप में नहीं, बल्कि राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, संगठन और सत्ता-संबंधों के संदर्भ में समझने का आधार प्रदान करता है। इस दृष्टिकोण से मुंगेर में जातिगत पहचान, उम्मीदवार चयन, सामाजिक प्रतिनिधित्व और राजनीतिक गठबंधन के संबंधों का परीक्षण किया जा सकता है।

मायरोन वीनर की पुस्तक *Party Politics in India : The Development of a Multi-Party System* (1957)⁵ भारतीय दल-व्यवस्था और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के विकास का अध्ययन करती है। यह कृति चुनावी राजनीति में राजनीतिक दलों, सामाजिक आधारों और संगठनात्मक गतिविधियों की भूमिका को समझने में सहायक है। मुंगेर के संदर्भ में राजनीतिक दलों की स्थानीय उपस्थिति, उम्मीदवारों की लोकप्रियता, गठबंधन और मतदाताओं से संपर्क के तरीकों का अध्ययन इस साहित्य के आधार पर किया जा सकता है।

क्रिस्टोफ जाफ़ेलो की पुस्तक *India's Silent Revolution : The Rise of the Lower Castes in North India* (2003)⁶ उत्तर भारत में पिछड़ी जातियों के राजनीतिक उदय और सामाजिक प्रतिनिधित्व के विस्तार का विश्लेषण करती है। यह अध्ययन इस बात को समझने में सहायक है कि सामाजिक समूह राजनीतिक संगठन और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के माध्यम से प्रतिनिधित्व की माँग कैसे प्रस्तुत करते हैं। मुंगेर में विभिन्न जातिगत समूहों की राजनीतिक भागीदारी और प्रतिनिधित्व संबंधी अपेक्षाओं का अध्ययन इस दृष्टिकोण से किया जा सकता है।

सुहास पलशीकर का भारतीय राजनीति और चुनावी प्रतिस्पर्धा पर लेखन राजनीतिक दलों, सामाजिक गठबंधनों तथा बदलती चुनावी प्रवृत्तियों को समझने में उपयोगी है। उनके विश्लेषणों के आधार पर यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि चुनावी निर्णय केवल पारंपरिक सामाजिक पहचान से प्रभावित होते हैं या राजनीतिक नेतृत्व, शासन के प्रदर्शन और विकास के मुद्दे भी मतदाताओं की प्राथमिकताओं को बदलते हैं। मुंगेर में इन कारकों के तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता है।

योगेंद्र यादव का लेख *Understanding the Second Democratic Upsurge: Trends of Bahujan Participation in Electoral Politics in the 1990s* (1999)⁷ भारतीय लोकतंत्र में वंचित और बहुजन समूहों की बढ़ती राजनीतिक भागीदारी को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन राजनीतिक सहभागिता और सामाजिक प्रतिनिधित्व के बीच संबंधों की ओर ध्यान आकर्षित करता है। मुंगेर के संदर्भ में इसका उपयोग विभिन्न सामाजिक वर्गों की चुनावी भागीदारी, राजनीतिक जागरूकता और प्रतिनिधित्व की अपेक्षाओं को समझने में किया जा सकता है।

उपर्युक्त साहित्य से स्पष्ट होता है कि मतदान व्यवहार का अध्ययन सामाजिक संबंधों, जातिगत पहचान, राजनीतिक दलों, सामाजिक प्रतिनिधित्व और चुनावी प्रतिस्पर्धा को साथ रखकर किया जाना चाहिए। हालांकि, इन विद्वानों के व्यापक निष्कर्षों को मुंगेर संसदीय क्षेत्र पर सीधे लागू नहीं किया जा सकता। स्थानीय स्तर पर जाति, वर्ग, धर्म और राजनीतिक चेतना के प्रभाव की पुष्टि के लिए क्षेत्र-विशिष्ट आँकड़ों और प्राथमिक सर्वेक्षण की आवश्यकता है।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

1. मुंगेर संसदीय क्षेत्र में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले जाति, सामाजिक वर्ग, धर्म और राजनीतिक चेतना जैसे प्रमुख निर्धारक तत्वों का विश्लेषण करना।
2. मतदाताओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक जागरूकता के बीच संबंधों का अध्ययन करना।
3. यह समझना कि सामाजिक पहचान, राजनीतिक नेतृत्व, चुनावी मुद्दे और विकास संबंधी अपेक्षाएँ मतदाताओं के चुनावी निर्णयों को किस प्रकार प्रभावित करती हैं।

मतदान व्यवहार की अवधारणा एवं सैद्धांतिक आधार

मतदान व्यवहार राजनीतिक समाजशास्त्र और चुनावी अध्ययन की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। इसके अंतर्गत मतदाताओं की राजनीतिक पसंद, उम्मीदवारों के प्रति दृष्टिकोण, राजनीतिक दलों से जुड़ाव, चुनावी मुद्दों का मूल्यांकन तथा मतदान में भागीदारी का अध्ययन किया जाता है। मतदाता का निर्णय स्थायी राजनीतिक निष्ठा, सामाजिक पहचान, आर्थिक हित, सरकारी योजनाओं के अनुभव या चुनाव के समय उत्पन्न परिस्थितियों के आधार पर बदल सकता है।

मतदान व्यवहार के अध्ययन में सामाजिक-समूह दृष्टिकोण विशेष रूप से उपयोगी है। Lazarsfeld, Berelson और Gaudet (1944) के अध्ययन से यह समझने में सहायता मिलती है कि व्यक्ति के सामाजिक संपर्क और समूहगत संबंध उसके राजनीतिक विचारों को प्रभावित कर सकते हैं। इसी प्रकार, राजनीतिक संचार और चुनावी अभियान का विश्लेषण यह स्पष्ट करने में सहायक है कि मतदाताओं की राय किस प्रकार बनती है और उसमें परिवर्तन कैसे आता है।

भारतीय परिस्थितियों में सामाजिक पहचान तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अध्ययन भी आवश्यक है। जाति, वर्ग और धर्म केवल व्यक्तिगत पहचान नहीं हैं कई परिस्थितियों में ये सामाजिक संसाधनों, राजनीतिक संगठन और प्रतिनिधित्व की माँग से भी संबंधित होते हैं। हालांकि, मतदान व्यवहार की व्याख्या केवल सामाजिक पहचान से करना पर्याप्त नहीं है। राजनीतिक नेतृत्व, उम्मीदवार की छवि, शासन का प्रदर्शन, विकास के प्रश्न और मतदाता की व्यक्तिगत प्राथमिकताएँ भी महत्वपूर्ण हैं।

मतदान व्यवहार का निर्धारक तत्व : जाति

भारतीय चुनावी राजनीति में जाति एक महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक कारक रही है। जातिगत संबंध सामाजिक संपर्क, विवाह, सामुदायिक संगठन और स्थानीय सत्ता-संबंधों में भूमिका निभाते हैं। चुनाव के दौरान ये संबंध राजनीतिक लामबंदी, उम्मीदवार चयन और प्रतिनिधित्व की अपेक्षाओं से जुड़ सकते हैं। राजनीतिक दल किसी क्षेत्र में सामाजिक समूहों की उपस्थिति और उनकी राजनीतिक प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी रणनीति तैयार कर सकते हैं।

Rajni Kothari (1970) के संपादित ग्रंथ *Caste and Indian Politics* ने जाति और राजनीति के संबंध को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत किया। इस दृष्टिकोण से जाति को केवल परंपरागत सामाजिक व्यवस्था के रूप में नहीं, बल्कि बदलती राजनीतिक प्रक्रियाओं के साथ अंतःक्रिया करने वाली संस्था के रूप में देखा जा सकता है।

मुंगेर संसदीय क्षेत्र के अध्ययन में यह जानना आवश्यक होगा कि जातिगत पहचान मतदाताओं की राजनीतिक पसंद को किस सीमा तक प्रभावित करती है। इसके लिए विभिन्न जातिगत समूहों की राजनीतिक भागीदारी, उम्मीदवारों के प्रति दृष्टिकोण, सामाजिक प्रतिनिधित्व की अपेक्षाओं और स्थानीय नेतृत्व के प्रभाव का परीक्षण किया जा सकता है। साथ ही, यह भी देखना चाहिए कि क्या मतदाता अपनी जातिगत पहचान से अलग होकर उम्मीदवार की योग्यता, विकास कार्यों, पार्टी की नीतियों या शासन के प्रदर्शन को प्राथमिकता देते हैं।

Jaffrelot (2003) ने उत्तर भारत में निम्न एवं पिछड़ी जातियों के राजनीतिक उदय और प्रतिनिधित्व में परिवर्तन का विश्लेषण किया। उनका अध्ययन यह समझने में मदद करता है कि सामाजिक रूप से वंचित समूह लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी के माध्यम से राजनीतिक प्रभाव कैसे विकसित कर सकते हैं।

किसी जाति के सभी मतदाताओं को एक ही राजनीतिक दल का समर्थक मानना वैज्ञानिक दृष्टि से उचित नहीं होगा। एक ही जातिगत समूह के भीतर आर्थिक स्थिति, शिक्षा, पीढ़ी, ग्रामीण-शहरी परिवेश और राजनीतिक विचारों के आधार पर विविधता हो सकती है। इसलिए मुंगेर में जाति के प्रभाव का अध्ययन करते समय जातिगत पहचान के साथ-साथ इन अन्य कारकों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

सामाजिक एवं आर्थिक वर्ग का प्रभाव

सामाजिक वर्ग मतदान व्यवहार का दूसरा महत्वपूर्ण निर्धारक है। आय, संपत्ति, भूमि-स्वामित्व, रोजगार, शिक्षा और जीवन स्तर व्यक्ति की आर्थिक आवश्यकताओं तथा राजनीतिक अपेक्षाओं को प्रभावित करते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर मतदाताओं के लिए रोजगार, खाद्य सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, स्वास्थ्य सेवाएँ और सरकारी कल्याणकारी योजनाएँ महत्वपूर्ण हो सकती हैं। वहीं, कृषि उत्पादों का मूल्य, सिंचाई, ऋण, बाजार और कृषि लागत ग्रामीण अर्थव्यवस्था से जुड़े मतदाताओं की प्राथमिकताओं को प्रभावित कर सकते हैं। मुंगेर संसदीय क्षेत्र में वर्गीय प्रभाव को समझने के लिए कृषि पर निर्भर परिवारों, मजदूरों, छोटे व्यापारियों, वेतनभोगी कर्मचारियों, शिक्षित युवाओं और अन्य पेशागत समूहों की आवश्यकताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। इन समूहों के आर्थिक हित अलग-अलग होने के कारण उनके चुनावी मुद्दों में भी अंतर हो सकता है।

Jaffrelot (2015)⁸ ने 2014 के भारतीय आम चुनाव में वर्गीय कारकों और उभरते नव-मध्यम वर्ग की भूमिका का विश्लेषण किया। उनके अध्ययन में यह प्रश्न सामने आता है कि आर्थिक आकांक्षाएँ और सामाजिक पहचान किस प्रकार एक-दूसरे के साथ मिलकर राजनीतिक पसंद को प्रभावित कर सकती हैं। बाद के विश्लेषणों में भी जाति और वर्ग को परस्पर संबंधित, लेकिन अलग-अलग व्याख्यात्मक कारकों के रूप में देखा गया है।

मुंगेर के संदर्भ में यह जाँचना आवश्यक है कि मतदाता चुनावी निर्णय लेते समय अपनी वर्तमान आर्थिक स्थिति को अधिक महत्व देते हैं या भविष्य में रोजगार, विकास और सामाजिक गतिशीलता की संभावनाओं को। यह भी अध्ययन किया जा सकता है कि सरकारी योजनाओं से लाभ प्राप्त करने का अनुभव राजनीतिक दलों और जनप्रतिनिधियों के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करता है या नहीं। वर्गीय विश्लेषण में यह सावधानी भी आवश्यक है कि कम आय वाले सभी मतदाताओं की राजनीतिक पसंद एक जैसी नहीं होती। आर्थिक स्थिति के साथ सामाजिक पहचान, राजनीतिक विचारधारा, नेतृत्व और स्थानीय परिस्थितियाँ भी चुनावी निर्णय को प्रभावित कर सकती हैं।

धर्म एवं धार्मिक पहचान की भूमिका

धर्म व्यक्ति की सांस्कृतिक पहचान, नैतिक मान्यताओं और सामुदायिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकता है। चुनावी राजनीति में धार्मिक पहचान कभी-कभी राजनीतिक प्रतिनिधित्व, सांस्कृतिक अधिकार, अल्पसंख्यक सुरक्षा, सामाजिक सद्भाव और सार्वजनिक नीतियों से संबंधित प्रश्नों के साथ जुड़ जाती है। राजनीतिक दल भी विभिन्न परिस्थितियों में धार्मिक समुदायों की अपेक्षाओं और चिंताओं को संबोधित करते हैं। मुंगेर संसदीय क्षेत्र में धर्म के प्रभाव का अध्ययन करते समय यह जानना उपयोगी होगा कि धार्मिक पहचान मतदाताओं के राजनीतिक दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रभावित करती है तथा क्या मतदाता धार्मिक पहचान की तुलना में रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, महँगाई और विकास जैसे मुद्दों को अधिक महत्व देते हैं। इसके लिए विभिन्न धार्मिक समुदायों के मतदाताओं से समान प्रकृति के प्रश्न पूछे जाने चाहिए। धर्म और मतदान व्यवहार के संबंध का विश्लेषण करते समय किसी समुदाय के सभी सदस्यों के बारे में एक जैसा निष्कर्ष निकालना उचित नहीं है। धार्मिक समुदायों के भीतर भी वर्ग, शिक्षा, आय, पेशा, राजनीतिक चेतना और स्थानीय अनुभवों के आधार पर विविधता मौजूद हो सकती है। इस कारण धार्मिक पहचान को एक संभावित प्रभावकारी कारक मानना चाहिए, न कि मतदान व्यवहार का एकमात्र निर्धारक। अध्ययन में धार्मिक पहचान के साथ-साथ राजनीतिक प्रतिनिधित्व, संवैधानिक अधिकारों, सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा और सार्वजनिक सेवाओं के प्रति दृष्टिकोण का भी परीक्षण किया जाना चाहिए। इससे यह समझने में मदद मिलेगी कि मतदाता का निर्णय धार्मिक पहचान, नीतिगत प्राथमिकताओं और व्यावहारिक आवश्यकताओं के किस प्रकार के संयोजन से प्रभावित होता है।

राजनीतिक चेतना एवं मतदाता जागरूकता

राजनीतिक चेतना से आशय नागरिकों की राजनीतिक संस्थाओं, अधिकारों, कर्तव्यों, सरकारी नीतियों, चुनावी प्रक्रियाओं और जनप्रतिनिधियों की जवाबदेही के प्रति समझ से है। राजनीतिक चेतना मतदान व्यवहार को प्रभावित

कर सकती है, क्योंकि जागरूक मतदाता उम्मीदवारों के कार्यों, राजनीतिक दलों की नीतियों और सार्वजनिक मुद्दों का मूल्यांकन करने का प्रयास कर सकता है। राजनीतिक चेतना के विकास में शिक्षा, परिवार, सामाजिक संगठन, समाचार माध्यम, डिजिटल मीडिया, राजनीतिक दलों की गतिविधियाँ और नागरिक अनुभव महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। मतदाता सूची, मतदान केंद्र, चुनावी प्रक्रिया और उपलब्ध सार्वजनिक सूचनाओं की जानकारी भी लोकतांत्रिक भागीदारी को सुविधाजनक बनाती है।

Carswell (2014)⁹ के ग्रामीण तमिलनाडु में मतदान पर आधारित अध्ययन में नागरिकता, अधिकारों, स्थानीय नीतियों के क्रियान्वयन, जातिगत निष्ठा और नेतृत्व के प्रति प्रतिबद्धता जैसे विभिन्न पहलुओं को मतदान की प्रेरणाओं से जोड़ा गया है। यह अध्ययन इस विचार को समर्थन देता है कि मतदान को केवल दलगत पसंद तक सीमित नहीं किया जा सकता इसमें नागरिकता और राजनीतिक भागीदारी के अनुभव भी शामिल होते हैं।

मुंगेर संसदीय क्षेत्र में राजनीतिक चेतना का मूल्यांकन करते समय मतदाताओं की शिक्षा को अकेला मानदंड नहीं बनाना चाहिए। औपचारिक शिक्षा कम होने पर भी कोई मतदाता स्थानीय समस्याओं और राजनीतिक परिस्थितियों के प्रति अत्यधिक जागरूक हो सकता है। इसके विपरीत, उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति भी चुनावी मुद्दों के संबंध में सीमित जानकारी रख सकता है। राजनीतिक चेतना का व्यावहारिक आकलन करने के लिए मतदाताओं से यह पूछा जा सकता है कि वे उम्मीदवारों के पिछले कार्यों के बारे में कितनी जानकारी रखते हैं, चुनावी घोषणापत्र पढ़ते हैं या नहीं, सरकारी योजनाओं की जानकारी कहाँ से प्राप्त करते हैं और राजनीतिक दावों की सत्यता की जाँच कैसे करते हैं। इस प्रकार राजनीतिक चेतना को केवल राजनीतिक चर्चा में रुचि के बजाय जानकारी, मूल्यांकन और लोकतांत्रिक जवाबदेही की समझ के आधार पर भी देखा जा सकता है।

जाति, वर्ग, धर्म और राजनीतिक चेतना की अंतःक्रिया

मतदान व्यवहार को समग्र रूप में समझने के लिए यह स्वीकार करना आवश्यक है कि जाति, वर्ग, धर्म और राजनीतिक चेतना स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं करते। ये एक-दूसरे के साथ अंतःक्रिया करते हैं और विभिन्न परिस्थितियों में इनका प्रभाव बदल सकता है। उदाहरण के लिए, किसी मतदाता की जातिगत पहचान राजनीतिक प्रतिनिधित्व की अपेक्षाओं को प्रभावित कर सकती है, जबकि उसकी आर्थिक स्थिति रोजगार या कल्याणकारी योजनाओं को अधिक महत्वपूर्ण बना सकती है। राजनीतिक चेतना इन अपेक्षाओं के आधार पर उम्मीदवारों और दलों के मूल्यांकन को प्रभावित कर सकती है।

Jaffrelot (2023) के जाति और वर्ग पर केंद्रित विश्लेषण में यह प्रश्न उठाया गया है कि भारतीय मतदाता जाति, उपजाति या वर्ग में से किस आधार पर मतदान करते हैं। उनका विश्लेषण जाति और वर्ग के संबंध को सरल या एकरेखीय मानने के बजाय स्थानीय सामाजिक संरचना और आर्थिक विभेदीकरण को ध्यान में रखने की आवश्यकता दर्शाता है।

मुंगेर में इन अंतःक्रियाओं को समझने के लिए मतदाताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, राजनीतिक जानकारी, उम्मीदवारों के प्रति दृष्टिकोण और प्रमुख चुनावी मुद्दों का संयुक्त विश्लेषण किया जा सकता है। इससे यह पता लगाने में सहायता मिलेगी कि किसी मतदाता के निर्णय में सामाजिक पहचान और आर्थिक हितों का सापेक्ष महत्व किस प्रकार बदलता है।

इस संदर्भ में राजनीतिक दलों की रणनीतियाँ भी महत्वपूर्ण हैं। उम्मीदवार चयन, गठबंधन, स्थानीय नेतृत्व, चुनावी घोषणाएँ और प्रचार अभियान विभिन्न सामाजिक समूहों तक पहुँचने के साधन बन सकते हैं। फिर भी, चुनावी रणनीति में किसी समूह को महत्व दिए जाने से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि उस समूह के सभी मतदाता उसी दल को वोट देंगे। मतदाता की स्वतंत्र पसंद और राजनीतिक परिस्थितियों में परिवर्तन की संभावना हमेशा बनी रहती है।

स्थानीय विकास, नेतृत्व और चुनावी मुद्दे

मतदान व्यवहार के अध्ययन में विकास संबंधी मुद्दों और राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका को भी शामिल करना आवश्यक है। मतदाता सड़क, बिजली, पेयजल, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, कृषि, परिवहन और स्थानीय प्रशासन जैसी सुविधाओं के आधार पर जनप्रतिनिधियों के कार्यों का मूल्यांकन कर सकते हैं। क्षेत्रीय समस्याओं के समाधान में जनप्रतिनिधियों की सक्रियता भी उनके प्रति मतदाताओं के दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकती है। मुंगेर संसदीय क्षेत्र के संदर्भ में स्थानीय विकास के प्रश्नों का अध्ययन करते समय विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों तथा अलग-अलग पेशागत समूहों की आवश्यकताओं को अलग-अलग समझना चाहिए। उदाहरण के लिए, कृषि पर निर्भर परिवारों की प्राथमिकताएँ गैर-कृषि रोजगार से जुड़े परिवारों से भिन्न हो सकती हैं। इसी प्रकार, युवा मतदाताओं के लिए रोजगार और शिक्षा महत्वपूर्ण हो सकते हैं, जबकि अन्य समूह स्वास्थ्य सेवाओं, सामाजिक सुरक्षा या स्थानीय बुनियादी सुविधाओं को अधिक प्राथमिकता दे सकते हैं। राजनीतिक नेतृत्व का प्रभाव उम्मीदवार की लोकप्रियता, उपलब्धता, जनसंपर्क, कार्यशैली और विश्वसनीयता से जुड़ा हो सकता है। मतदाता किसी राजनीतिक दल की व्यापक विचारधारा के साथ-साथ उम्मीदवार के व्यक्तिगत प्रदर्शन को भी महत्व दे सकता है। इस प्रकार मतदान व्यवहार में दलगत निष्ठा और उम्मीदवार के प्रति व्यक्तिगत धारणा दोनों की भूमिका हो सकती है। क्षेत्रीय अध्ययन में मतदाताओं से यह जानना उपयोगी होगा कि उनके अनुसार पिछले कार्यकाल में कौन-से स्थानीय मुद्दों पर प्रगति हुई, किन समस्याओं का समाधान नहीं हुआ और आगामी प्रतिनिधि से उनकी क्या अपेक्षाएँ हैं। इन प्रतिक्रियाओं की तुलना चुनावी परिणामों तथा उपलब्ध आधिकारिक आँकड़ों से करने पर अधिक विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं।

चुनावी प्रचार, मीडिया और सूचना का प्रभाव

आधुनिक चुनावों में समाचार माध्यम, डिजिटल प्लेटफॉर्म, सामाजिक नेटवर्क और राजनीतिक प्रचार मतदाताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के महत्वपूर्ण साधन बन गए हैं। चुनावी अभियान के दौरान राजनीतिक दल अपनी नीतियों, उपलब्धियों और भविष्य की योजनाओं को प्रस्तुत करते हैं। मतदाता इन सूचनाओं के आधार पर उम्मीदवारों तथा दलों के प्रति अपनी राय बना सकते हैं। सूचना की उपलब्धता और राजनीतिक चेतना एक ही बात नहीं हैं। किसी राजनीतिक संदेश को देखना या साझा करना आवश्यक रूप से उसकी सत्यता की जाँच करने अथवा उसके आधार पर सूचित निर्णय लेने का प्रमाण नहीं है। इसलिए मुंगेर में मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करते समय यह जानना चाहिए कि मतदाता किन माध्यमों से सूचना प्राप्त करते हैं, विभिन्न स्रोतों पर कितना विश्वास करते हैं और राजनीतिक दावों की पुष्टि किस प्रकार करते हैं। चुनावी प्रचार का प्रभाव सामाजिक संपर्कों से भी जुड़ सकता है। परिवार, मित्र, सहकर्मी और स्थानीय राजनीतिक कार्यकर्ता किसी उम्मीदवार या मुद्दे के बारे में चर्चा कर सकते हैं। यह प्रक्रिया मतदाता की राय को मजबूत कर सकती है या उसमें परिवर्तन ला सकती है। इस प्रकार मीडिया और सामाजिक संपर्कों को अलग-अलग न देखकर उनके पारस्परिक संबंधों का भी अध्ययन किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह सैद्धांतिक निष्कर्ष निकलता है कि मतदान व्यवहार एक बहुआयामी सामाजिक एवं राजनीतिक प्रक्रिया है। जाति, सामाजिक वर्ग, धर्म और राजनीतिक चेतना इसके प्रमुख संभावित निर्धारक हैं, लेकिन इनमें से कोई भी कारक प्रत्येक परिस्थिति में समान प्रभाव नहीं रखता। मतदान संबंधी निर्णय सामाजिक पहचान, आर्थिक हित, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, नेतृत्व, विकास संबंधी अपेक्षाओं और नागरिक जागरूकता के संयुक्त प्रभाव से निर्मित हो सकते हैं। मुंगेर संसदीय क्षेत्र में जातिगत पहचान का प्रभाव सामाजिक लामबंदी, उम्मीदवार चयन और प्रतिनिधित्व की अपेक्षाओं के माध्यम से समझा जा सकता है। आर्थिक वर्ग रोजगार, कृषि, आय, सार्वजनिक सेवाओं और कल्याणकारी योजनाओं से संबंधित प्राथमिकताओं को प्रभावित कर सकता है। धार्मिक पहचान राजनीतिक प्रतिनिधित्व और सांस्कृतिक सुरक्षा जैसे प्रश्नों से जुड़ सकती है, जबकि राजनीतिक चेतना मतदाताओं को उपलब्ध

सूचनाओं तथा जनप्रतिनिधियों के कार्यों का मूल्यांकन करने में सहायता प्रदान कर सकती है। इन कारकों को एक-दूसरे से पूरी तरह अलग करके समझना उचित नहीं होगा। एक ही मतदाता जातिगत पहचान को सामाजिक प्रतिनिधित्व के संदर्भ में महत्त्व दे सकता है, आर्थिक हितों के आधार पर सरकारी नीतियों का मूल्यांकन कर सकता है और राजनीतिक चेतना के आधार पर उम्मीदवार की जवाबदेही पर विचार कर सकता है। इसलिए चुनावी व्यवहार की अधिक व्यापक व्याख्या के लिए समन्वित दृष्टिकोण आवश्यक है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मुंगेर संसदीय क्षेत्र के संबंध में किसी विशिष्ट जाति, धर्म या वर्ग के मतदाताओं की राजनीतिक पसंद के बारे में निश्चित निष्कर्ष तभी प्रस्तुत किए जाने चाहिए, जब उनके समर्थन में विश्वसनीय क्षेत्रीय आँकड़े उपलब्ध हों। प्राथमिक सर्वेक्षण, निर्वाचन संबंधी आधिकारिक आँकड़ों और तुलनात्मक विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट किया जा सकता है कि स्थानीय स्तर पर कौन-से कारक अधिक प्रभावशाली हैं। इस प्रकार का अध्ययन न केवल मुंगेर की चुनावी राजनीति को समझने में योगदान दे सकता है, बल्कि भारतीय लोकतंत्र में सामाजिक विविधता, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और मतदाता की स्वतंत्र पसंद के संबंधों को समझने में भी उपयोगी होगा।

संदर्भ सूची :

1. Lazarsfeld, P. F., Berelson, B., & Gaudet, H. (1944). *The People's Choice: How the Voter Makes Up His Mind in a Presidential Campaign*. Columbia University Press.
2. Berelson, B. R., Lazarsfeld, P. F., & McPhee, W. N. (1954). *Voting: A Study of Opinion Formation in a Presidential Campaign*. University of Chicago Press.
3. Brass, P.R. (1990). *The Politics of India Since Independence* (2nd ed.). Cambridge University Press.
4. Kothari, R. (Ed.). (1970). *Caste in Indian Politics*. Orient Longman.
5. Weiner, M. (1957). *Party Politics in India: The Development of a Multi-Party System*. Princeton University Press.
6. Jaffrelot, C. (2003). *India's Silent Revolution: The Rise of the Lower Castes in North India*. Columbia University Press.
7. Yadav, Y. (1999). Understanding the Second Democratic Upsurge: Trends of Bahun Participation in Electoral Politics in the 1990s. *Economic and Political Weekly*.
8. Jaffrelot, C. (2015). The Class Element in the 2014 Indian Election and the BJP's Success with Special Reference to the Hindi Belt. *Studies in Indian Politics*, 3(1), 19–38. <https://doi.org/10.1177/2321023015575211>
9. Carswell, G. (2014). Why Indians Vote: Reflections on Rights, Citizenship, and Democracy from a Tamil Nadu Village. *Antipode*. <https://doi.org/10.1111/anti.12081>